Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2022 3(1), 587–593

DIGITAL LEARNING IN HIGHER EDUCATION: THE NEW PARADOX OF COLLECTIVISM AND ISOLATION AMONG STUDENTS

उच्च शिक्षा में डिजिटल लर्निंग: विद्यार्थियों के बीच सामूहिकता और अलगाव का नया विरोधाभास

Dr. Samaresh Bharaty [1], Sarthik Das [2]

[1] Faculty of Teacher Education, Central University of South Bihar, Gaya, India
[2] PhD Researcher, Department of Teacher Education, Central University of South Bihar, Gaya, India

ABSTRACT

English: The prevalence of digital learning in higher education presents a dichotomy between collectivism and isolation among students. On the one hand, digital platforms provide unprecedented opportunities for collaborative and shared learning experiences, thereby fostering a sense of collegiality. On the other hand, these technologies can lead students to experience a sense of isolation and disconnection during their educational journey in virtual environments. This paper explores the paradox of how digital learning reshapes social interactions, influences student engagement, and thereby affects students' overall educational experience.

Hindi: उच्च शिक्षा में डिजिटल लर्निंग का प्रादुर्भाव विद्यार्थियों के बीच सामूहिकता और अलगाव के बीच एक द्वंद्व प्रस्तुत करता है। एक ओर, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म सहयोग और साझा तरीके से सीखने के अनुभवों के लिए अभूतपूर्व अवसर प्रदान करते हैं, जिससे सामूहिकता की भावना को बढ़ावा मिलता है। दूसरी ओर, ये प्रौद्योगिकियाँ विद्यार्थियों को आभासी वातावरण में अपनी शैक्षिक यात्रा के दौरान अलगाव और वियोग की भावना का अनुभव करने के लिए प्रेरित कर सकती हैं। यह पत्र इस द्वंद्व का अन्वेषण करता है कि डिजिटल लर्निंग कैसे सामाजिक अंतःक्रियाओं को नया रूप देती है, विद्यार्थी सहभागिता को प्रभावित करती है, और इस तरह विद्यार्थियों के समग्र शैक्षिक अनुभव को प्रभावित करती है।

Keywords: Digital Learning, Collectivis, Alienation, Online Learning, Student Engagement, डिजिटल लर्निंग, कलेक्टिविस, अलगाव, ऑनलाइन लर्निंग, छात्र जुड़ाव

Corresponding Author
Dr. Samaresh Bharaty,
samaresh@cusb.ac.in

DOI
10.29121/shodhkosh.v3.i1.2022.2534

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2022 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

डिजिटल लर्निंग ने उच्च शिक्षा को तेजी से बदल दिया है और इसे ज्यादा लचीला, सुलभ और नई शैक्षणिक दृष्टिकोण प्रदान किए हैं। जबकि इन परिवर्तनों ने विद्यार्थियों के बीच अधिक सहयोग और सामुदायिक निर्माण को सक्षम किया है साथ हीं उन्होंने चुनौतियाँ भी पेश की हैं जो अलगाव की ओर ले जा सकती हैं (एंडरसन और ड्रोन, 2011)। सामूहिकता, जो विद्यार्थियों को एक-दूसरे के साथ काम करने और एक-दूसरे का समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित करती है (रोवई, 2002), और अलगाव, जहाँ विद्यार्थी अपने साथियों से अलग और वियोगित महसूस करते हैं, के बीच का तनाव बढ़ती चिंता का विषय है।

डिजिटल लर्निंग वातावरण में सामूहिकता और अलगाव दोनों में योगदान करने वाले कारकों को समझते हुए, यह पत्र इस द्वंद्व की पड़ताल करता है।

2. सैद्धांतिक ढांचा

डिजिटल लर्निंग में सामूहिकता और अलगाव के द्वंद्व को समझने के लिए कई सैद्धांतिक दृष्टिकोणों पर विचार करना आवश्यक है। सामाजिक रचनावाद यह मानता है कि सीखना स्वाभाविक रूप से एक सामाजिक प्रक्रिया है, जहाँ ज्ञान दूसरों के साथ अंतर्क्रिया के माध्यम से निर्मित होता है (विगोत्स्की, 1978)। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म इस अंतर्क्रिया को सुलभ बनाते हैं, सहयोगात्मक सीखने के तरीके को सक्षम करते हैं और विद्यार्थियों के बीच सामुदायिक भावना को बढ़ावा देते हैं। इसके विपरीत, अलगाव का सिद्धांत, जैसा कि मार्क्स (1844) द्वारा व्यक्त किया गया और बाद में शैक्षणिक सिद्धांतकारों द्वारा अनुकूलित किया गया यह प्रेषित करता है कि एक ठोस, साझा सीखने के वातावरण से वियोग , अलगाव और विसंगति की भावना पैदा कर सकती है।

3. संबंधित साहित्य की समीक्षा

डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से विद्यार्थियों की सहभागिता को बढ़ावा देने की संभावना पर कई विद्वानों ने इंगित किया है। एंडरसन (2019) के अनुसार, लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS) और सहयोगी सॉफ़्टवेयर जैसे डिजिटल टूल्स शैक्षिक गतिविधियों में विद्यार्थियों की सहभागिता और अंतर्क्रिया को बढ़ा सकते हैं। हालांकि, ऑनलाइन लर्निंग वातावरण में परिवर्तन ने विद्यार्थियों की सहभागिता पर चिंताएँ भी उजागर की हैं। मार्टिन और बोलीगर (2018) ने पाया कि जहां डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म सहयोगात्मक लर्निंग को सुगम बना सकते हैं, वहीं आमने-सामने की बातचीत की कमी अक्सर विद्यार्थियों में असंतोष और प्रेरणा की कमी की भावनाओं को जन्म देती है।

जोन्स और शाओ (2011) द्वारा परिभाषित डिजिटल सामूहिकता, ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्मों द्वारा सुगम किए गए सहयोगात्मक और सामूहिक लर्निंग अनुभवों को संदर्भित करता है। ये प्लेटफ़ॉर्म विद्यार्थियों को एक साथ काम करने, ज्ञान साझा करने, और लर्निंग समुदाय बनाने को प्रेरित करते हैं। शिर्की (2008) के शोध कार्य इस दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं, जो इस बात पर जोर देते हैं कि डिजिटल प्रौद्योगिकियों ने सामाजिक बातचीत और सामूहिक बुद्धिमत्ता के नए रूपों को सक्षम किया है। शिर्की का डिजिटल सामूहिकता का विश्लेषण इस तथ्य को उजागर करता है कि इसने शिक्षा का लोकतंत्रीकरण किया है, जिससे ज्ञान अधिक सुलभ और सहयोगात्मक हो गया है। हालांकि, यह डिजिटल सामूहिकता सीमाओं से परे नहीं है। डबघ और किट्सांटास (2012) के अनुसार, डिजिटल सामूहिकता की प्रभावशीलता काफी हद तक विद्यार्थियों की स्वयं-नियमन करने और उनकी लर्निंग प्रक्रियाओं को प्रबंधित करने की क्षमता पर निर्भर करती है।

जहाँ डिजिटल सामूहिकता सहयोग को प्रोत्साहित करती है, वहीं डिजिटल लर्निंग के कुछ तत्व अलगाव की भावना को भी बढ़ावा दे सकते हैं। मूर (1993) ने `ट्रांजेक्शनल डिस्टेंस` की अवधारणा प्रस्तुत की, जो ऑनलाइन लर्निंग वातावरण में शिक्षकों और विद्यार्थी के बीच मनोवैज्ञानिक और संवादात्मक अंतर को संदर्भित करता है। यह दूरी विद्यार्थी में अलगाव और वियोग की भावनाओं को जन्म दे सकती है। सॉन्ग, सिंगलटन, हिल, और कोह (2004) के शोध भी इस विचार का समर्थन करते हैं, जिसमें उन्होंने पाया कि विद्यार्थियों में डिजिटल लर्निंग के कारण अलगाव की भावना बढ़ सकती है, खासकर जब उनके पास व्यक्तिगत संपर्क का अभाव होता है।

4. डिजिटल सामूहिकता का उदय

डिजिटल शिक्षा प्लेटफ़ॉर्म, जैसे कि लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS), सोशल मीडिया, और गूगल डॉक्स (Google Docs) जैसे सहयोगात्मक उपकरण, विद्यार्थी के लिए एक साथ साझा तरीके से काम करने के नए अवसर पैदा किए हैं (अचीवमेंट, 2021)। ये प्लेटफ़ॉर्म सिंक्रोनस और असिंक्रोनस सहयोग

की सुविधा प्रदान करते हैं, जिससे विद्यार्थी अपनी भौगोलिक सीमाओं के बावजूद अपने साथियों के साथ जुड़ सकते हैं (हरास्स्टंस्की, 2008)। चर्चा- मंच, समूह परियोजनाएँ, और साथियों के साथ प्रतिक्रिया तंत्र जैसी गतिविधियाँ सामुदायिक भावना को बढ़ावा देते हैं, जिससे विद्यार्थियों को अपने शैक्षिक प्रयासों में एक-दूसरे का समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

इसके अलावा, डिजिटल शिक्षा, शिक्षा का लोकतंत्रीकरण कर सकती है, जिससे विभिन्न पृष्ठभूमि के विद्यार्थी सामूहिक ज्ञान में योगदान कर सकते हैं (मीन्स एट अल., 2009)। मुक्त शैक्षणिक संसाधन और ऑनलाइन पाठ्यक्रम शिक्षा को अधिक सुलभ बनाते हैं, जिससे शिक्षा की बाधाएँ कम होती हैं और समावेशिता को बढ़ावा मिलता है (सॉन्ग एट अल., 2004)। यह डिजिटल सामूहिकता सामाजिक रचनावाद के सिद्धांतों के साथ मेल खाती है, जहाँ सीखना एक सहयोगात्मक प्रक्रिया है जो कई दृष्टिकोणों के योगदान से लाभान्वित होती है।

5. डिजिटल अलगाव का विरोधाभास

बढ़े हुए सहयोग की संभावनाओं के बावजूद, डिजिटल शिक्षा विद्यार्थियों को अलगाव की ओर भी ले जा सकती है। साथियों और शिक्षकों से भौतिक दूरी मुख्य रूप से अलगाव की भावना का कारण बन सकता है (हडजर एट अल., 2021) । हलाँकि डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म अंतर्क्रिया के उपकरण प्रदान करते हैं, फिर भी आमने-सामने संचार की अनुपस्थिति भावनात्मक जुड़ाव की कमी और सीखने की प्रक्रिया से वियोग की भावना का परिणाम हो सकती है।

इसके अतिरिक्त, डिजिटल शिक्षा का आत्मनिर्देशित स्वभाव अलगाव की भावनाओं को बढ़ा सकता है। विद्यार्थी प्रेरित होने में संघर्ष कर सकते हैं या ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की संरचना की कमी से अभिभूत महसूस कर सकते हैं। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म की गुमनामी भी वियोग की भावना में योगदान दे सकती है, क्योंकि विद्यार्थी को यह महसूस हो सकता है कि उनके योगदान को कम आंका जा रहा है या अनदेखा किया जा रहा है।

कोविड -19 महामारी, जिसने कई संस्थानों को दूरस्थ शिक्षा मॉडल अपनाने के लिए मजबूर किया (कलमर एट अल., 2022), ने इन चुनौतियों को उजागर किया। कुछ विद्यार्थी डिजिटल वातावरण में समृद्ध हुए, जबकि दूसरों ने तनाव, चिंता, और अकेलेपन के बढ़ते स्तर को रेखांकित किया। व्यक्तिगत अंत:क्रियाओं की कमी और परिसर समुदाय की अनुपस्थिति ने अलगाव की भावनाओं को बढ़ा दिया, विशेष रूप से उन विद्यार्थी के बीच जिनके पास मजबूत समर्थन नेटवर्क नहीं थे।

6. डिजिटल लर्निंग में सामूहिकता और अलगाव को संतुलित करना

डिजिटल लर्निंग की बढ़ती भूमिका ने उच्च शिक्षा में नए अवसरों और चुनौतियों को जन्म दिया है। एक ओर, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म सामूहिकता और सहयोग को प्रोत्साहित करने में सक्षम हैं, जिससे विद्यार्थी एक साथ मिलकर ज्ञान का निर्माण कर सकते हैं। दूसरी ओर, इन प्लेटफ़ॉर्मों के अत्यधिक उपयोग से विद्यार्थी में अलगाव और वियोग की भावना भी पैदा हो सकती है। यह विरोधाभास डिजिटल लर्निंग के प्रभाव को समग्र रूप से समझने और इसके लाभों को अधिकतम करने के लिए एक संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता को दर्शाता है। इस खंड में, हम विस्तार से समझेंगे कि कैसे सामूहिकता और अलगाव के बीच संतुलन स्थापित किया जा सकता है, ताकि डिजिटल लर्निंग का अनुभव समृद्ध, सहयोगात्मक और मानसिक रूप से स्वस्थ हो।

7. सामाजिक संपर्क के अवसरों का विस्तार

डिजिटल लर्निंग के संदर्भ में सामूहिकता और अलगाव के बीच संतुलन बनाने का एक प्रमुख तरीका यह है कि विद्यार्थियों को नियमित और सार्थक सामाजिक संपर्क के अवसर प्रदान किए जाएं। ऑनलाइन कक्षाओं के साथ-साथ, संस्थानों को विद्यार्थी के लिए आभासी समुदायों, समूह चर्चा मंचों, और सहकर्मी समर्थन समूहों का आयोजन करना चाहिए। इन प्लेटफ़ॉर्मों पर विद्यार्थी को विचार-विमर्श, सहयोग, और व्यक्तिगत अनुभव साझा करने के अवसर मिलते हैं, जो सामाजिक बंधनों को मजबूत करने में सहायक होते हैं। उदाहरण के लिए, विद्यार्थी समूह परियोजनाओं, वर्चुअल अध्ययन सत्र, और ऑनलाइन क्लब जैसी गतिविधियों के माध्यम से एक-दूसरे के साथ जुड़ सकते हैं, जिससे डिजिटल लर्निंग में सामूहिकता का अनुभव बढ़ता है।

8. शिक्षक-विद्यार्थी संवाद को प्रोत्साहित करना

डिजिटल लर्निंग में शिक्षक-विद्यार्थी संवाद को सुदृढ़ करना भी संतुलन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षक विद्यार्थी के साथ व्यक्तिगत संपर्क बनाए रखने के लिए ऑनलाइन वन-ऑन-वन ट्यूटरिंग सत्र, और व्यक्तिगत फीडबैक देने की प्रक्रिया को लागू कर सकते हैं। यह विद्यार्थी को यह महसूस करने में मदद करता है कि वे केवल एक संख्या नहीं हैं, बल्कि उनके प्रयासों को पहचाना और सराहा जा रहा है। इस प्रकार का व्यक्तिगत संपर्क विद्यार्थी को भावनात्मक और शैक्षिक समर्थन प्रदान करता है, जिससे वे अलगाव की भावना से बच सकते हैं और अधिक आत्मविश्वास के साथ सीखने की प्रक्रिया में शामिल हो सकते हैं।

9. मल्टीमॉडल संचार का उपयोग

डिजिटल लर्निंग में सामूहिकता और अलगाव के बीच संतुलन बनाने के लिए मल्टीमॉडल संचार का उपयोग एक प्रभावी रणनीति हो सकती है। विद्यार्थियों को विभिन्न संचार माध्यमों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जैसे कि वीडियो, ऑडियो, टेक्स्ट, और इन्फोग्राफिक्स। यह न केवल सीखने के अनुभव को समृद्ध करता है, बल्कि विद्यार्थी को अपने विचारों और समझ को व्यक्त करने के लिए अधिक लचीलापन विकल्प भी प्रदान करता है। मल्टीमॉडल संचार से विद्यार्थी उन तरीकों का उपयोग कर सकते हैं, जो उनकी व्यक्तिगत शैली और आवश्यकताओं के अनुकूल हों, जिससे सामूहिकता को बढ़ावा मिलता है और अलगाव की संभावना कम होती है।

10. समानता और समावेशन को प्राथमिकता देना

डिजिटल लर्निंग में सामूहिकता और अलगाव के बीच संतुलन बनाने के लिए समानता और समावेशन को प्राथमिकता देना अत्यंत आवश्यक है। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सभी विद्यार्थी के पास समान रूप से डिजिटल संसाधनों तक पहुंच हो, और किसी भी प्रकार की असमानता को दूर करने के लिए अतिरिक्त सहायता उपलब्ध हो। उदाहरण के लिए, इंटरनेट कनेक्टिविटी, उपकरणों की उपलब्धता, और तकनीकी प्रशिक्षण में अंतर को पाटने के लिए संस्थानों को विद्यार्थी की मदद करनी चाहिए। इसके अलावा, पाठ्यक्रम और गतिविधियों को इस तरह से डिजाइन किया जाना चाहिए कि वे सभी विद्यार्थियों की जरूरतों और क्षमताओं का सम्मान करें, जिससे एक समावेशी और सहायक वातावरण का निर्माण हो।

11. स्वास्थ्य और कल्याण को ध्यान में रखना

डिजिटल लर्निंग में संतुलन बनाने का एक और महत्वपूर्ण पहलू है—विद्यार्थी के स्वास्थ्य और कल्याण पर ध्यान देना। विद्यार्थी को डिजिटल थकान और मानसिक तनाव से बचाने के लिए नियमित

ब्रेक, स्वस्थ जीवनशैली के सुझाव, और मानसिक स्वास्थ्य समर्थन सेवाएं प्रदान की जानी चाहिए। इसके अलावा, संस्थानों को विद्यार्थियों को मानसिक स्वास्थ्य के महत्व के बारे में शिक्षित करना चाहिए और उन्हें तनाव प्रबंधन और आत्म-देखभाल तकनीकों का प्रशिक्षण देना चाहिए। जब विद्यार्थी का स्वास्थ्य और कल्याण प्राथमिकता बनता है, तो वे डिजिटल शिक्षा के दौरान खुद को अधिक समर्थित और जुड़े हुए महसूस करते हैं, जिससे अलगाव की भावना कम होती है।

12. कृत्रिम बुद्धिमत्ता और वैयक्तिकरण का उपयोग

डिजिटल लर्निंग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और वैयक्तिकरण तकनीकों का उपयोग सामूहिकता और अलगाव के बीच संतुलन बनाने में सहायक हो सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) -आधारित टूल्स विद्यार्थी के सीखने के पैटर्न का विश्लेषण कर सकते हैं और उनके लिए व्यक्तिगत शैक्षिक योजनाएँ तैयार कर सकते हैं। इससे विद्यार्थी को अपनी गति और शैली के अनुसार सीखने का अवसर मिलता है, जबकि वे सामूहिक गतिविधियों में भी भाग ले सकते हैं। इसके अलावा, वैयक्तिकरण से विद्यार्थी को व्यक्तिगत समर्थन और मार्गदर्शन मिलता है, जिससे वे अधिक आत्मविश्वास और संलग्न महसूस करते हैं, और अलगाव की भावना से बच सकते हैं।

13. रचनात्मकता और नवाचार को प्रोत्साहित करना

डिजिटल लर्निंग में सामूहिकता और अलगाव को संतुलित करने के लिए रचनात्मकता और नवाचार को प्रोत्साहित करना एक और महत्वपूर्ण रणनीति है। विद्यार्थी को नए विचारों को विकसित करने, समस्याओं को हल करने, और अपने साथियों के साथ सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर प्रोजेक्ट-बेस्ड लर्निंग, हैकाथॉन, और नवाचार कार्यशालाएँ आयोजित की जा सकती हैं, जहाँ विद्यार्थी एक साथ मिलकर काम कर सकते हैं। यह सहयोगात्मक माहौल न केवल विद्यार्थियों के बीच सामूहिकता की भावना को बढ़ाता है, बल्कि उन्हें अलगाव से बचाने में भी मदद करता है, क्योंकि वे एक उद्देश्यपूर्ण और संलग्न अनुभव का हिस्सा बनते हैं।

14. फीडबैक और सुधार की निरंतरता

अंत में, डिजिटल लर्निंग में सामूहिकता और अलगाव के बीच संतुलन बनाने के लिए निरंतर फीडबैक और सुधार की प्रक्रिया महत्वपूर्ण है। विद्यार्थी और शिक्षकों के बीच नियमित फीडबैक चक्र को स्थापित करना आवश्यक है, ताकि विद्यार्थी की जरूरतों, चिंताओं, और अनुभवों को समझा जा सके। संस्थानों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि डिजिटल शिक्षा के तरीकों और नीतियों को नियमित रूप से अपडेट किया जाए, ताकि वे विद्यार्थी की बदलती आवश्यकताओं के अनुकूल हो सकें। जब विद्यार्थी को यह महसूस होता है कि उनकी आवाज़ सुनी जा रही है और उनके अनुभवों को महत्व दिया जा रहा है, तो वे अधिक समर्थित और शामिल महसूस करते हैं, जिससे सामूहिकता और अलगाव के बीच संतुलन बनाए रखने में मदद मिलती है।

15. निष्कर्ष

डिजिटल लर्निंग में सामूहिकता और अलगाव का विरोधाभास उच्च शिक्षा के लिए एक जटिल चुनौती का प्रतिनिधित्व करता है। जबकि डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म सहयोग और सामूहिक भावना को बढ़ावा देने की क्षमता रखते हैं, वे उन विद्यार्थी को वियोगित करने का भी जोखिम उठाते हैं जो आभासी वातावरण में जुड़ने के लिए संघर्ष करते हैं। जैसे-जैसे डिजिटल लर्निंग विकसित होती है, शिक्षकों और संस्थानों के लिए इन विरोधी ताकतों के बीच संतुलन बनाना, ऐसे सीखने के वातावरण बनाना जो सामूहिक जुड़ाव और व्यक्तिगत कल्याण दोनों को बढ़ावा दें महत्वपूर्ण हो जाता है । उन कारकों को संबोधित करके जो अलगाव

में योगदान करते हैं और सामाजिक अंतःक्रिया के अवसरों को बढ़ाते हैं, उच्च शिक्षा डिजिटल लर्निंग के लाभों का उपयोग कर सकती है और इससे जुड़े नुकसानों को कम कर सकती है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

अचीवमेन्ट, जी.ओ.ओ.एस. (2021, मार्च 10). *वाट इज डिजिटाल लर्निंग?* द गवर्नर्स ऑफिस ऑफ स्टूडेंट अचीवमेंट. https://gosa.georgia.gov/about-us/what-digital-learning#:~:text=Digital%20learning%20is%20more%20than,facilitates%20how%20students%20receive%20content

एंडरसन, टी. (2019). चैलेंजेस एंड ऑपर्च्युनिटीस फॉर यूज ऑफ़ सोशल मीडिया इन हाइयर एजुकेशन. *जर्नल ऑफ़ ऑनलाईन लर्निंग* फॉर डेवलपमेंट, *15*(3), 45-58. https://doi.org/10.56059/jl4d.v6i1.327

एंडरसन, टी., एंड ड्रोन, जे. (2011). थ्री जेनरेशनस ऑफ डिस्टैंस एजुकेशन पेडागॉजी. *इंटरनेशनल रीव्यू ऑफ रिसर्च इन ओपन एंड डिस्ट्रीब्यूटेड लर्निंग, 12*(3), 80-97. https://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ920744.pdf

कलमर, ई., आर्टस, टी. एफ., बोसमैन, ई., फोर्ड, सी., डी क्लुइज्वर, एल., बीट्स, जे., वेल्डकैंप, एल., टिमर्स, पी., बेसेलिंग, डी., कूपमैन, जे., फैन, सी., बेरेवोएट्स, ई., ट्रॉट्सेनबर्ग, एम., मैटन, एल., वैन रेमुंड्ट, जे., साड़ी, ई., उमर, एल., बेइनेमा, ई., विंकेल, आर., एंड वैन डेर सैंडेन, एम. (2022). द कोविड 19 पैराडॉक्स ऑफ ऑनलाईन कोलेबोरेटिव एजुकेशन: व्हेन यू केन नॉट फिजिकली मीत यू नीड मोर सोसल इंटरेक्शन. *हेलियोन, 8*(1), e08823. https://doi.org/10.1016/j.heliyon.2022.e08823

जोन्स, एन., एंड शाओ, बी. (2011). द रोल ऑफ डिजिटल कलेक्टिवनेस इन फ्यूचर ऑनलाइन एजुकेशन. *एजुकेशनल टेक्नोलॉजी एंड सोसाइटी, 14*(3), 65-77.

डबघ, एन., एंड किट्सांटास, ए. (2012). पर्सनल लर्निंग एनवायरमेंटस, सोसल मीडिया, एंड सेल्फ-रेगुलेटेड लर्निंग: अ नेचुरल फॉर्मूला फॉर कनेक्टिंग फॉर्मल एंड इनफॉर्मल लर्निंग. *द* इंटरनेट और हायर एजुकेशन, *15*(1), 3-8. https://doi.org/10.1016/j.iheduc.2011.06.002

मार्क्स, के. (1844). *इकोनॉमिक एंड फिलोसॉफिकल मनुस्कृप्त.* प्रोग्रेस पब्लिशर्स. https://www.marxists.org/archive/marx/works/download/pdf/Economic-Philosophic-Manuscripts-1844.pdf

मार्टिन, एफ., एंड बोलीगर, डी. यू. (2018). इंगेजमेंट मैटर्स: स्टूडेंट्स परसेप्शनस ऑन द इंपोर्टेंस ऑफ इंगेजमेंट स्ट्रेटजी इन ऑनलाइन लर्निंग एनवायरमेंट. ऑनलाइन लर्निंग, *22*(1), 205-222. https://doi.org/10.24059/olj.v22i1.1092

मीन्स, बी., टोयामा, वाई., मर्फी, आर., बाकिया, एम., एंड जोन्स, के. (2009). *इवेल्यूएशन ऑफ़ एविडेंस-बेस्ड प्रैक्टिसेज इन ऑनलाईन लर्निंग: मेटा एनालिसिस एंड रिव्यूज ऑफ ऑनलाईन लर्निंग स्टडीज.* इन *यू. एस. डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन.* https://www2.ed.gov/rschstat/eval/tech/evidence-based-practices/finalreport.pdf

मूर, एम. जी. (1993). *थियरी ऑफ ट्रांजेक्शनल डिस्टेंस. इन डी. कीगन (संपादक)*, थियोरिटिकल प्रिंसिपल्स ऑफ डिस्टैंस एजुकेशन, (पृ. 22-38). *रूटलेज.* https://www.scirp.org/reference/referencespapers?referenceid=2868375

रोवई, ए. पी. (2002). सेंस ऑफ कम्युनिटी, परसीव्ड कॉग्निटिव लर्निंग एंड परसिस्टेंस इन असिंक्रोनस लर्निंग नेटवर्क्स. *द इंटरनेट एंड हाइयर एजुकेशन, 5*(4), 319-332. https://doi.org/10.1016/s1096-7516(02)00130-6

विगोत्स्की, एल. एस. (1978). *माइंड इन सोसाइटी: द डेवलपमेंट ऑफ हाइयर साइकोलॉजिकल प्रोसेसेस.* हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. https://doi.org/10.2307/j.ctvjf9vz4

शिर्की, सी. (2008). हियर कम्स एवरीबडी: द पावर ऑफ ऑर्गनाइजिंग विदआउट ऑर्गनाइजेशन्स. पेंगुइन प्रेस. https://techofcomm.files.wordpress.com/2015/11/here_comes_everybody_power_of_organizing_without_organizations.pdf

सॉन्ग, एल., सिंगलटन, ई. एस., हिल, जे. आर., और कोह, एम. एच. (2004). इंप्रूविंग ऑनलाइन लर्निंग: स्टूडेंट परसेप्शन ऑफ यूजफुल एंड चैलेंजिंग कैरक्टरिस्टिक। *द इंटरनेट एंड हाइयर एजुकेशन, 7*(1), 59-70. https://doi.org/10.1016/j.iheduc.2003.11.003

हरास्टिंस्की, एस. (2008). असिंक्रोनस एंड सिंक्रोनस ई-लर्निंग. *एडुकेज़ क्वार्टरली, 31*(4), 51-55. https://www.scirp.org/reference/referencespapers?referenceid=1424119

हैडजर, ए., ग्रेकु, ए.एल., शर्फ, जे., डी मोल, एफ., मोरिनज, जे., एंड हैशर, टी. (2021). चेंजेज इन स्कूल एलीनेशन प्रोफाइल्स आमोंग सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स एंड द रोल ऑफ टीचिंग स्टाइल: रिजल्ट्स फ्रॉम अ लोंगीतुदीनल स्टडी इन लक्जमबर्ग एंड स्विट्जरलैंड. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च, 105*, 101697. https://doi.org/10.1016/j.ijer.2020.101697